प्राचीन भारत में जलविज्ञानीय ज्ञान

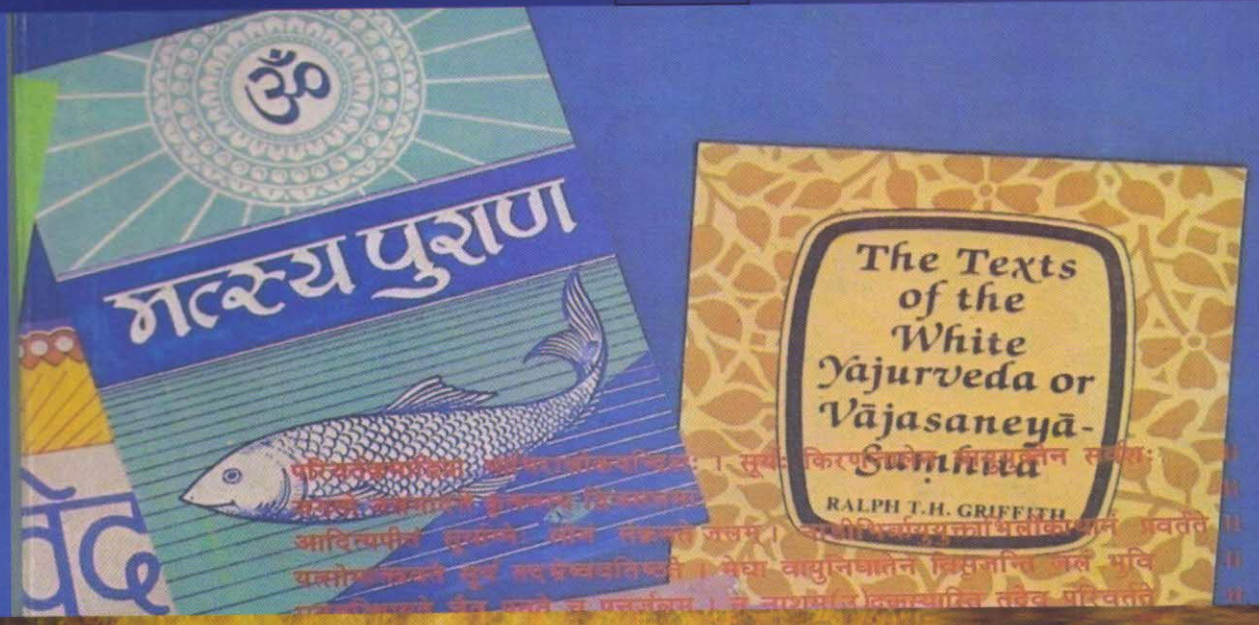

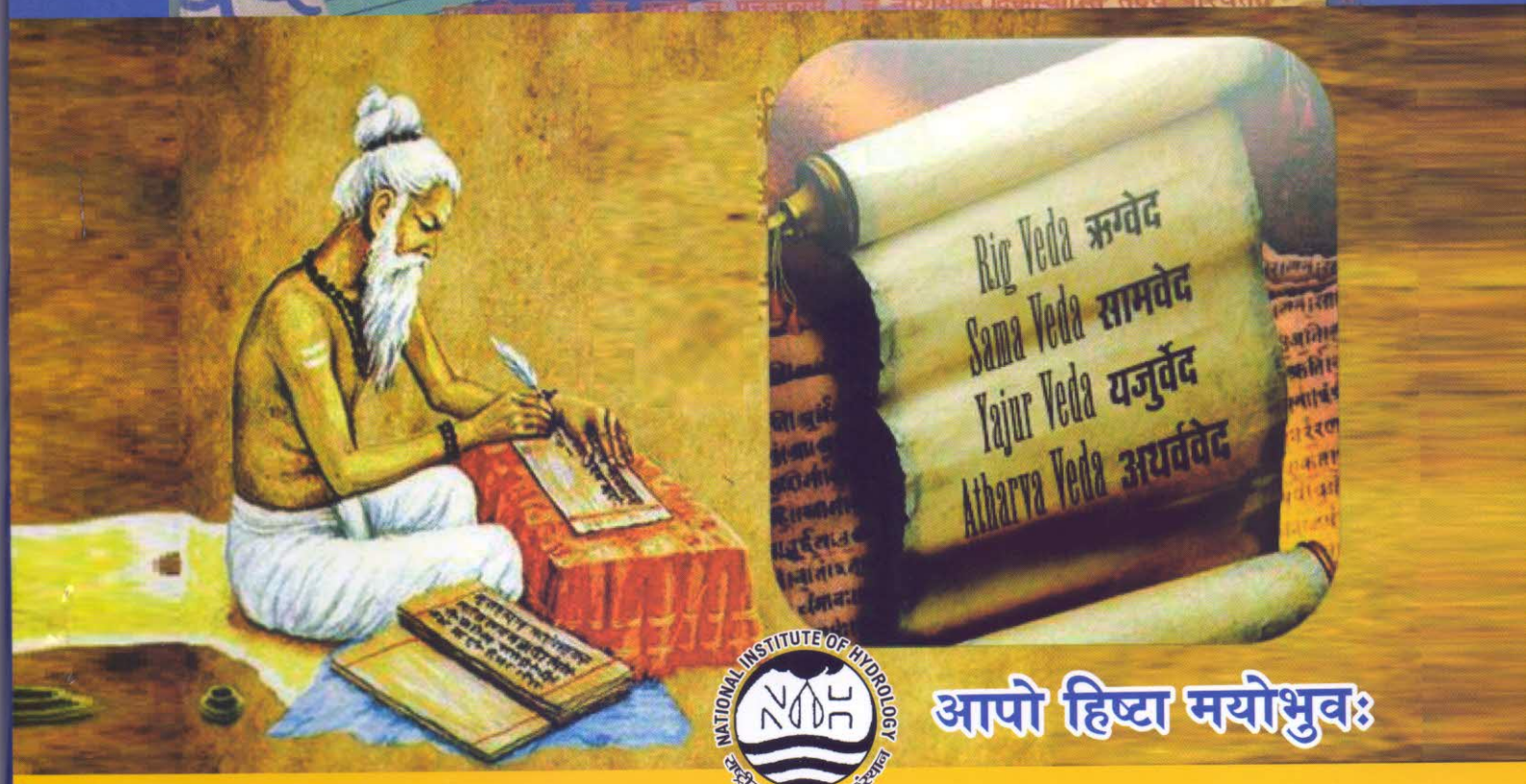

आपो हिष्टा मयोभुवः

आपो हिष्टा मयोभुवः

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

जलविज्ञान भवन,
रुड़की–247667 (उत्तराखंड), भारत
जनवरी, 2019

प्राचीन भारत में जलविज्ञानीय ज्ञान

(द्वितीय संस्करण)

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

(जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा संरक्षण मंत्रालय)

जलविज्ञान भवन

रुड़की-247 667 (उत्तराखंड), भारत

जनवरी, 2019

नदी को देवी स्वरूपा मानते हुए उसके आह्वान के लिए श्लोक

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरु।।

भावार्थ: हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु और कावेरी, कृपया अपनी उपस्थिति से इस जल को समृद्ध करें जिसमें मैं स्नान कर रहा हूं ।

गंगा सिंधु सरस्वति च यमुना गोदावरि नर्मदा ।
कावेरि शरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका ।।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता जया गण्डकी ।
पूर्णा:पूर्णजलै:समुद्रसहिता:कुर्वन्तु मे मंगलम् ।।

भावार्थ: गंगा, सिंधु, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, शरयू, महेन्द्रत्न, चम्बल, वेदिका, क्षिप्रा, वेत्रवती, मुख्य रूप से महासुरनदी, जया और गंडकी नदियाँ पवित्र और निरपेक्ष हों तथा मुझ पर परोपकार करें ।

नमामि गंगे तव पादपंकजं सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपाम् ।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम् ।

भावार्थ: हे माँ गंगा, सभी सांसारिक आनन्द, सुखों और मोक्ष की आराधना के भाव के विभिन्न स्तरों के अनुसार, सभी देवी-देवता और आपके पावन चरणों की पूजा करते हैं, मैं भी आपके पवित्र चरणों को अपने हृदय में अर्पित करता हूँ।

विषय-सूची

शीर्षक	पृष्ठ सं.
प्रस्तावना (द्वितीय संस्करण)	iii
प्रस्तावना (प्रथम संस्करण)	v
चित्रों की सूची	ix
तालिकाओं की सूची	ix
संक्षेपणों की सूची	xi
सारांश	xiii
अध्याय 1: प्रस्तावना	01
अध्याय 2: जलविज्ञानीय चक्र	11
अध्याय 3: बादलों की उत्पत्ति, वर्षा और इसका मापन	23
अध्याय 4: अपरोधन, अन्त:स्यन्दन तथा वाष्पोत्सर्जन	51
अध्याय 5: भू-आकृति विज्ञान तथा सतही जल	61
अध्याय 6: भूजल	67
अध्याय 7: जल गुणवत्ता और अपशिष्ट जल प्रबंधन	77
अध्याय 8: जल संसाधन उपयोग, संरक्षण और प्रबंधन	91
अध्याय 9: समापन टिप्पणी	99
ग्रंथ सूची	101